International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 2, February- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

साहित्यिक साक्ष्य इतिहास के स्त्रोत के रूप में

लेखकः किरण
स्थाई पता : गांव व डा0 लाखनमाजरा
तहसील महम जिला रोहतक
पिनकोड 124514

संक्षेपिकाः—

भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास अत्यन्त गौरवपूर्ण रहा हैं। दुर्भाग्यवश हम प्राचीन इतिहास को सामग्री के अभाव मे पूर्णतया पूर्ननिर्मित करने मे अक्षम अनुभव करते हैं क्योंकि प्राचीन भारत मे इतिहास लेखन कंला विकसित नही थी। जिस प्रकार के इतिहास लेखक यूनान, रोम आदि देशों मे हुए है, हमारे यहां उनका सदा अभाव रहा हैं। प्राचीन भारत का इतिहास लिखने मे अनेंक कठिनाईयों का सामना करना पडा है क्योकि हमारे इतिहास के स्त्रोतो मे भौतिक घटनाओ के लेखे—जोखे का महत्व अलग से नही पहचाना गया हैं। लेकिन इस आधार पर यह कह देना उपयुक्त नही होगा की प्राचीन भारत ऐतिहासिक घटनाओ से शून्य था। हमारे पास इतिहास जानने के प्रर्याप्त साधन हैं। हमारे पास विश्व का सबसे विशाल साहित्य है जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। वैदिक साहित्य के अध्ययन से हमे इस बात के प्रमाण स्पष्ट रूप मे मिल जाते हैं। कल्हण की राजतंरगिणी, कौटिल्य का अर्थ शास्त्र, कामन्दक की नीतिसार एंव मनुस्मृति को आज भी हमारी कानूनी संहिता होने का गौरव प्राप्त हैं। इस प्रकार भारतीय प्राचीन इतिहास मे भारतीयों ने श्रेष्ठ साहित्य का सृजन किया हैं।

भूमिकाः—

एक लम्बी अवधि तक विद्ववानों मे यह मान्यता प्रचलित रही कि भारतवासियों मे ऐतिहासिक दृष्ठि का अभाव था। भारत मे यूनान के हेरोडोटस
या रोम के लिवी जैसे इतिहास लेखक नही हुए इसलिए कुछ विद्वानों की धारणा बन गई कि भाारतीयों को इतिहास की समझ नही थी। वस्तुतः प्राचीन भारतीयों के इतिहास की संकल्ना आधुनिक इतिहासकारों की संकलना से पूर्णतया भिन्न थी। आधुनिक इतिहासकार ऐतिहासिक
घटनाओं मे कार्य—कारण सम्बध स्थापित करने के प्रयास करता हैं किन्तु प्राचीन भारतीय इतिहाकार केवल उन घटनाओ वर्णन करते थे,
जिससे जनसाधारण को कुछ शिक्षा मिल सके। यह सत्य है कि प्राचीन भारत के इतिहास का दृष्टिकोण सदा आध्यात्मिक रहा है एंव इतिहास जिस रूप मे आज परिभाषित होता हैं, उस रूप मे भारतीयो ने इतिहास रचना नही की। परन्तु इसका अर्थ यह नही है कि भारत

मे इतिहास अपेक्षित रहा। हमारे पास इतिहास जानने के प्रर्याप्त साधन हैं। हमारे पास विश्व का सबसे विशाल साहित्य हैं, जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। वैदिक कालिन साहित्य से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन काल से भारतीय इतिहास एक गौरव पूर्ण स्थान रखता हैं। भारतीय इतिहास की सामग्री का इतना बाहुल्य है कि उस अथाह सामग्री–सागर मे प्रक्षिप्तांशों, प्रतिवादोंतथा उत्युक्तियों का अभाव नही हैं। उन्हे इतिहास का मूलाधार तथा इतिहास जानने के साधनों का माध्यम बनाकर जीवन पर्यन्त कोई भी अन्वेषण कर सकता हैं।

साहित्यिक साक्ष्य या स्त्रोत :–

साहित्यिक साक्ष्य के अर्न्तगत साहित्यिक ग्रन्थों से प्राप्त ऐतिहासिक वस्तुओं का अध्ययन किया जाता हैं। साहित्यिक साक्ष्य को दो भागो मे विभाजित किया जा सकता हैंः–

1– धार्मिक साहित्य 2– लौकिक साहित्य
धार्मिक साहित्य के अर्न्तगत ब्राहमण तथा ब्राहमणेतर साहित्य की चर्चा की जाती है। लौकिक साहित्य के अर्न्तगत ऐतिहासिक ग्रन्थ, जीवनी, कल्पना प्रधान तथा गल्प साहित्य का वर्णन किया जाता हैं। धार्मिक साहित्यः–

धार्मिक साहित्य भी दो प्रकार का होता हैं।
1– ब्राहमण ग्रन्थ 2– अब्राहमण ग्रन्थ ; (बौद्व तथा जैन ग्रन्थ)

ब्राहमण ग्रन्थः–

ब्राहमण ग्रन्थों को भी श्रुति तथा स्मृति दो भागों मे बाटा जाता हैं। श्रुति के अर्न्तगत चारों वेद, ब्राहमण तथा उपनिषदों की गणना की जाती है और और स्मृति मे दो महाकात्य रामायण एंव महाभारत, पुराण तथा स्मृतियां आती हैं।

वेदः–

वेद आर्यो के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। प्राचीनता तथा महानता के कारण ही ये मानवरहित न होकर ईश्वर–प्रदत माने गए हैं। वेद चार हैं : ऋग्वेद, सामवेद यजुर्वेद, अथर्ववेद। वेदों मे ऋग्वेद सर्वाधिक प्राचीन हैं। इस ग्रन्थ से प्राचीन आर्यो के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन के विषय मे जानकारी प्राप्त होती हैं। यजुर्वेद से तत्कालीन भारत के सामाजिक एंव धार्मिक पक्ष की जानकारी प्राप्त होती हैं। सामवेद तत्कालीन भारत की गायन विद्या का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करता हैं। अथर्ववेद से उतरवैदिक कालीन भारत की पारिवारिक, सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन की विशद् जानकारी प्राप्त होती हैं।

ब्राहमणः–

वैदिक मंत्रों तथा संहिताओं गद्य टीकाओं को ब्राहमण कहा जाता हैं। ब्राहमणों को वेदों का परिशिष्ट माना जाता हैं। इसमे वैदों की व्याख्याएं गद्य मे की जाती हैं। ब्राहमण ग्रन्थो मे ऐतरेय, पंचविंश, शतपथ, तैतरीय आदि महत्वपूर्ण हैं। ब्राहमण ग्रन्थो मे राजा परीक्षित के बाद एंव बिम्बसार से पहले की घटनाओं की जानकारी मिलती हैं।

वेदांग :–

इनकी रचना वैदिक काल के अन्त मे हुई, ये वेदों के ही अंग हैं। इनकी सख्या छः है ये वेदांग हैं। – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द और ज्योतिष।

आरण्यकः–

यह एक स्वतः स्फूर्त रचना हैं जिसमे विभिन्न आध्यात्मिक एंव दार्शनिक समस्यओं का वर्णन किया गया है। इनमे आत्मा, मृत्यु तथा जीवन सम्बधि विषयों का वर्णन किया गया हैं। चूँकि इनका पठन–पाठन वानप्रस्थी, मुनि तथा वनवासियों द्वारा वन मे किया गया हैं। इसलिए इन ग्रन्थों को आरण्यक कहा जाता हैं।

उपनिषदः–

उप (गुरू के पास) + नि (शिष्य का) + षढ (बैठना) अर्थात गुरू के समीप बैठकर शिष्य जो ज्ञान प्राप्त करें वह उपनिषद हैं। वैदिक साहित्य का अन्तिम भाग उपनिषद है इसलिए उपनिषदों को वेदान्त भी कहते हैं। भारतीय दर्शन की शुरूआत आरण्यक से होती हैं जबकि उनका चरम उपनिषदों को माना जाता हैं। उपनिषद मे आत्मा एंव ब्रहा का वर्णन हैं। इनका प्रमुख विषय 'आत्मा विद्या' हैं। उपनिषदों की रचना गंगा घाटी मे हुई थी। इसमे अध्यात्म विद्या के गूढ रहस्यों का बडे ही सुन्दर ढंग से विवेचनात्मक वर्णन प्रस्तुत किया गया हैं। उपनिषदों की कुल संख्या 108 हैं।

पुराणः–

ईसा की तीसरी और चौथी शताब्दी मे पुराण लिखे गए थे। पुराणों के रचयिता लोमहर्ष या उनके पुत्र उग्रश्रवा को माना जाता हैं। कहीं–कहीं वेदव्यास को भी पुराणों का कर्ता कहा गया हैं। कुल 18 पुराण है ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी प्राप्त करने के लिए पुराण एक महत्पूर्ण स्त्रोत हैं। इन पुराणों से प्राचीन राजवंशो तथा उनके कियाकलापो का ज्ञान प्राप्त होता है इन पुराणों मे ब्रहा, मत्स्य, विष्णु, भागवत, अग्नि, शिव, मार्कण्डेय तथा गरूड पुराण ही ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

स्मृतिंयॉः–

हिन्दु धार्मिक साहित्य मे स्मृतियों का अपना ही महत्व है वे वैदिक आर्यो के कानून सम्बधी ग्रन्ध हैं। इनमे वैदिक आर्यो के दैनिक जीवन के विषय मे नियम व उपनियम आदि का वर्णन हैं। स्मृतियों मे मुनस्मृति, नारद स्मृति, याजवल्क्य प्रमुख हैं।

महाकाव्यः–

वैदिक साहित्य के पश्चात् भारतीय साहित्य के दो स्तम्भ रामायण तथामहाभारत हैं। वास्तव मे, सम्पूर्ण धार्मिक साहित्य मे इनका उंचा स्थान हैं। रामायण के रचियता महाकवि बाल्मीकि ने राम का जीवन–चरित्र लिखकर तत्कालीन भारत की राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक स्थिति को बोधगम्य बना दिया हैं। दूसरा महाकाव्य महाभारत हैं। महाभारत के रचयिता व्यास मुनि माते जाते हैं। महाभारत मे प्राचीन भारत की सामाजिक धार्मिक परिस्थिति एंव राजनैतिक परिस्थितियों का वर्णन किया गया हैं।

बौद्व साहित्य :–

जहां तक साहित्य का प्रश्न है, सबसे प्राचीन बौद्व ग्रन्थ है त्रिपिटिक तीन हैं– सुतपिटक, विनयपिटक, और अभिधम्मपिटक । भगवान बुद्व के निर्वाण प्राप्त करने के बाद इनकी रचना हुई । सुतपिटक मे बुद्व के धार्मिक विचारों और उनके वचनों का सग्रंह हैं। विनयपिटक मे बौद्व संघ के नियमों का उल्लेख है अभिधम्मपिटक मे बौद्व संघ के नियमों का उल्लेख हैं। अभिधम्पमिटक मे बौद्व दर्शन की विवेचना की गई हैं। इलके अलावा जातक कथा की रचना हुई जिसमे बुद्व के पूर्व जन्मों की काल्पनिक कथाएं हैं। मिलिन्दपन्हों एक अन्य प्रमुख बौद्व साहित्य हैं। जो कि यूनानी राजा मिनाण्डर और बौद्व भिक्षु नागसेन का दार्शनिक वार्तालाप हैं। इसमे ईसा की पहलीदो शताब्दियो के उतर – पश्चिम भारत के जीवन की झलक भी देखने को मिलती हैं। दिव्यावदान मे अनके राजाओं की कथाएं है अशोक तथा उनके उतराधिकारियोंके विषय मे इससे बहुत अधिक जानकारी प्राप्त होती हैं।

जैन ग्रन्थः–

बौद्व ग्रन्थों की भांति जैन ग्रन्थ भी पूर्णतया धार्मिक हैं। इन ग्रन्थों मे परिशिष्टपर्वन विशेष महत्वपूर्ण हैं। भद्रबाहुचरित्र दुसरा महत्वपूर्ण जैन ग्रन्थ है इस ग्रन्थ मे जैनाचार्य भद्रबाहु तथा चन्द्रगुप्त मौर्य पर प्रकाश डाला गया हैं। भगवती सुत्र से महावीर के जीवन पर प्रकाश डाला गया हैं। भगवती सुत्र मे सोलह महानपदों का भी उल्लेख है इस जैन साहित्य से तत्कालीन भारतीय समाज की सामाजिक और
धार्मिक दशा का पर्याप्त प्रकाश डाला गया हैं।

लौकिक साहित्यः–

लौकिक साहित्य को धर्मोत्तर साहित्य भी कहा जाता है इस प्रकार के साहित्य मे ऐतिहासिक एंव समसामयिक साहित्य आते है इस प्रकार के साहित्य मे भारतीय समाज के राजनितिक एंव सांस्कृतिक इतिहास को जानने मे काफी मदद् मिलती है । इस प्रकार के साहित्य की कृतियां निम्न हैं–

राजनीतिक एंव व्याकरण सम्बधिक ग्रन्थ :–

इस प्रकार के ग्रन्थो मे प्रमुख ग्रन्थ अर्थशास्त्र माना जाता हैं आचार्य चाणक्य द्वारा रचित इस ग्रन्थ को पहला भारतीय राजनीति का ग्रन्थ माना जाता हैं। इस ग्रन्थ मे मौर्यकालिन राजनीतिक, सामाजिक ,आर्थिक एंव धार्मिक स्थिति की जानकारी मिलती हैं। 15 खण्डो मे विभाजित इस ग्रन्थ का द्वितिय एंव तृतीय खण्ड सर्वाधिक प्राचीन एंव महत्वपूर्ण हैं।

अष्टाध्यायी पाणिनिकृत एंव महर्षि महाभाव्य पंतजलि वैसे व्याकरण का ग्रन्थ माने जाते है किन्तु इन ग्रन्थो मे कही–2 राजाओं– महाराजाओं एंव जनतंत्रो के घटनाचक्रका विवरण भी मिलता हैं।

ऐतिहासिक ग्रन्थः–

अनेक ऐतिहासिके ग्रन्थो से सम्बंधित शासकों व राज्यों के विषय मे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक अवस्था का यथोचित ज्ञान प्राप्त होता हैं। इन ऐतिहासिक ग्रन्थों मे गार्गी सहिता से यवनों के आक्रमण, शुक्रनीतिसार से कुछ प्राचीन भारत के ऐतिहासिक तत्वों, राजतंरगिणी से कश्मीर के इतिहास, हर्षचरित से हर्षवर्धन के शासनकाल की, मुद्राराक्षस से चाणक्य एंव चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा नन्दवशं के विनाश, पृथ्वीराज रासों से पृथ्वीराज के शासनकाल के विषय मे अति महत्पूर्ण जानकारी प्राप्त होती हैं। संगम साहित्य से दक्षिण भारत के इतिहास पर समुचित प्रकाश डाला गया हैं।

निष्कर्षः–

इस प्रकार हम देखते है कि साहित्यिक साक्ष्य प्राचीन इतिहास का गौरवपूर्ण चित्र प्रस्तुत करते हैं। भारतीय प्राचीन इतिहास मे भारतीयों ने श्रेष्ठ साहित्य का सृजन किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1– मजूमदार, आर0 सी0 : जैम बसेंपबंस ।बबवनदज वि प्दकपंए फारमा के0 एल0 मुखोपध्याय, कलकता, 1960
2– शर्मा, कालूराम व प्रकाश ब्यास :– मध्यकालीन भारत का राजनीतिक एंव सांस्कृतिक इतिहास, पंचशील प्रकाशन, जयपुर 2004.
3– केटकर संध्या : – जैम भ्पेजवतल वि प्दकपंद ।तजण
4– पिल्लैई :– जैम ूंल वि ैपसचलण
5– सहाय, डा0 सच्चिदानन्द :– मन्दिर स्थापत्य का इतिहास ।
6– चौबे, झारखण्ड :– इतिहास दर्शन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2001.
7– कौशिक, कुंवर बहादुर :– इतिहास दर्शन एंव प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन विदयार्थी पुस्तक भण्डार गौरखपुर, 1983